अमराई
से
संसद

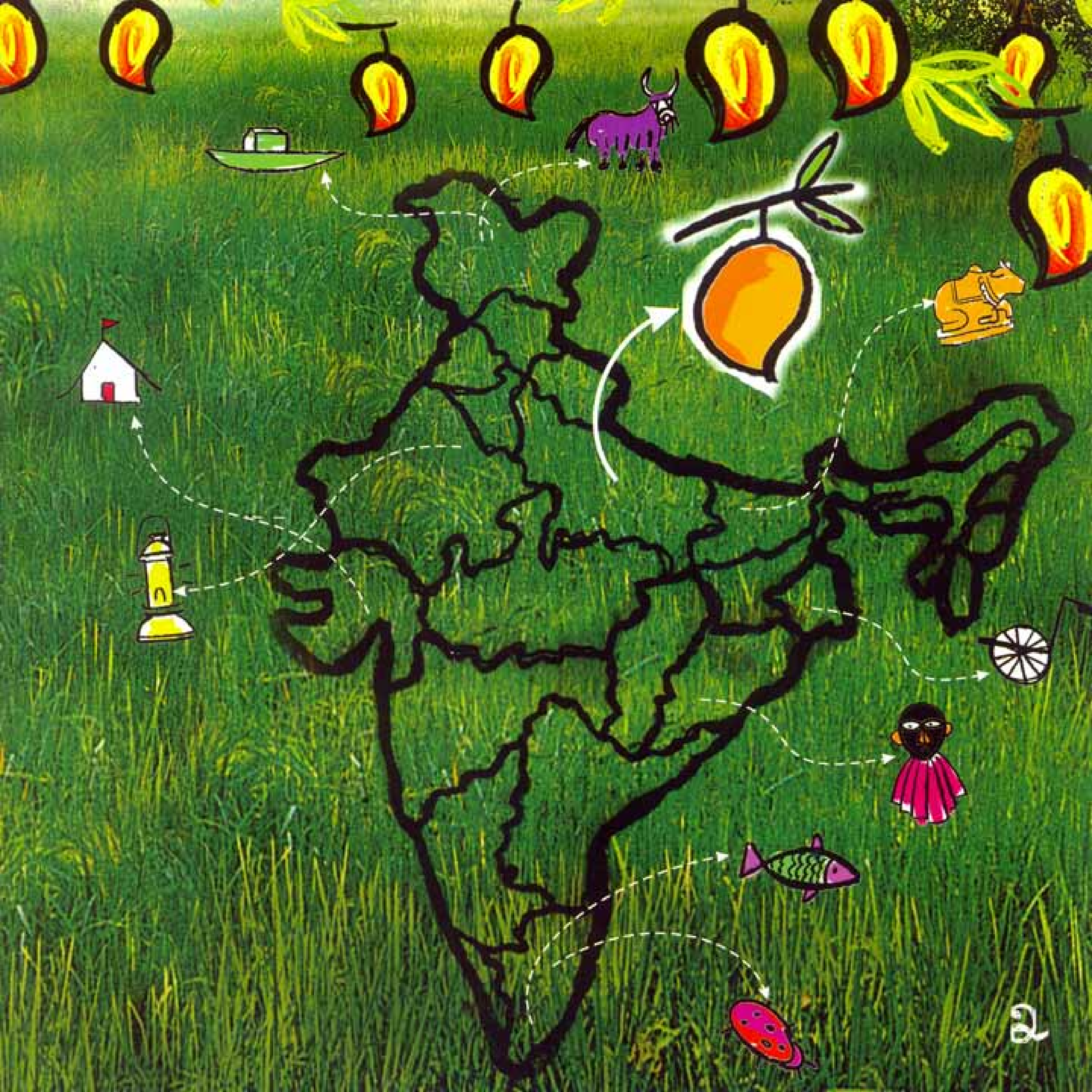

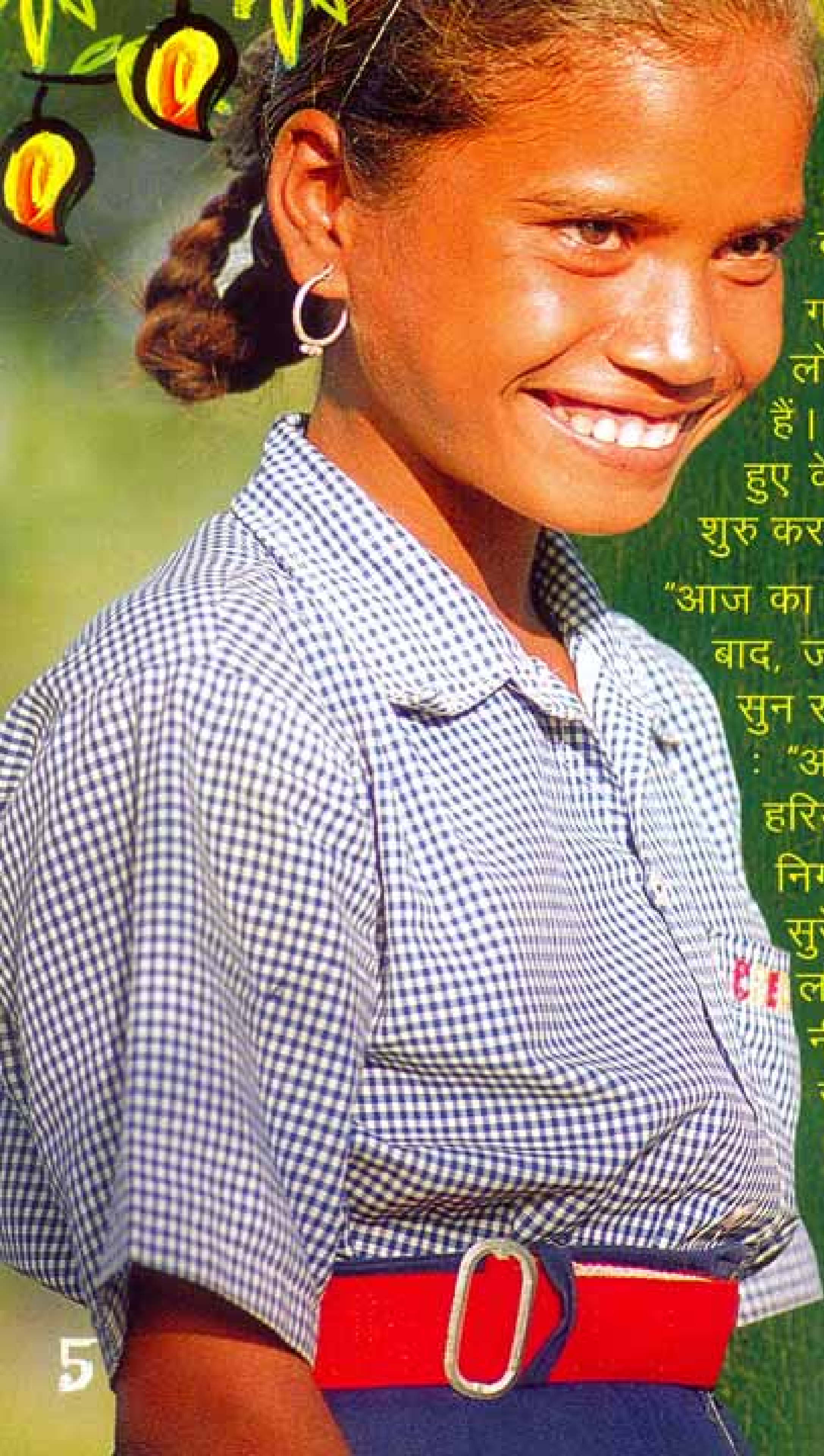

आम के पेड़ के नीचे संसद की कार्यवाही चालू है।

गला साफ़ करते हुए सभा–अध्यक्ष लोहे के खम्भे जैसे सीधे खड़े हो जाते हैं। अपनी आवाज़ पर खुद चकित होते हुए वे एक ज़ोरदार घोषणा के साथ सभा शुरु करते हैं:

"आज का विषय है शिक्षा।" एक लम्बी चुप्पी के बाद, जब उन्हें यकीन हो जाता है कि सब सुन रहे हैं तब वे फिर बोलना शुरु करते हैं : "आगे बढ़िए"। लगता है कि लहराती हरियाली उनके शब्दों को साबुत ही निगल गई। विपक्ष के सदस्य 9 वर्ष के सुरेश कुमार बीच की खुली जगह पर लड़खड़ाते हुए जा खड़े होते हैं। अपनी नीली कमीज़ के ऊपर लगे सेफ़्टी–पिन को वे बटन की तरह छूते हुए कहते हैं:

हमने टी.वी. पर देखा है संसद की कार्यवाही कैसे होती है। वैसा ही हम यहाँ करते हैं। सवाल कैसे पूछे जाएँ ये जानना ज़रूरी है। और ये भी जानना ज़रूरी है कि हम कैसे अपने जीवन में बदलाव ला सकते हैं।

– सुरेश कुमार, उम्र 9 वर्ष

'अमराई–संसद' ने अपने दिन की कार्यवाही ख़त्म कर ली है। डूबते सूरज की बिखरी रोशनी में 10 वर्षीया सीमा कुमारी मीरा के कंधों को समेटती हुई, एक दोस्त की तरह फुसफुसाती है "जब तुम जानती हो कि भीड़ ज़रा–सा मौका पाकर चीखने–चिल्लाने को तैयार बैठी है, तब जो तुम कह रही हो उसमें तुम्हारा पूरा विश्वास होना चाहिए। नहीं तो वे तो बस चिल्लाएँगे और ये सब आख़िर ख़त्म तो होना ही है।"

विपक्ष की धमाकेदार चीखों से अभी भी हिली हुई मीरा सिर्फ मुस्कुराती है। बस्तों को पाकर सीमा मीरा को उसका बस्ता दे देती है और कंधे उचका कर कहती है "नहीं तो तुम्हें उनसे ज़्यादा ज़ोर से चिल्लाना पड़ेगा।"

फिर व्यवस्था बनाए रखने के लिए एक निष्पक्ष अध्यक्ष चुनो और अंतिम निर्णय लेने के लिए राष्ट्रपति को चुनो। उसके बाद खेल शुरू करो। सबसे पहले विपक्ष सरकार से कोई प्रश्न पूछे। सत्ता पक्ष का मंत्री उसका जवाब दे। हां, संसद की कार्यवाही का लेखा-जोखा लिखने वालों को मत भूलना। वो सभा के अंत में लिखित ब्यौरा अध्यक्ष को सौंप देंगे। अपने टीचर से बाल संसद गठित करने की अनुमति मांगो।

आवश्यक सामान : बहुत से बच्चे, कागज, पेंसिलें।